हिन्दी उपन्यास के रचनातंत्र में ऐतिहासिकता

डॉ. गोविन्द के. नंदाणिया

श्री एस. आर. भाभोर आर्ट्स कॉलेज, सींगवड.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

उपन्यास आधुनिक साहित्य की विभिन्न विधाओं में सबसे लोकप्रिय और सशक्त विधा है। मानव जीवन के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करने वाले इस विधा का एक रूप ऐतिहासिक उपन्यास का है। उपन्यास के कथ्य में ऐतिहासिक घटनाओं, चरित्रों और देशकाल के समावेश से ऐतिहासिक उपन्यासों का निर्माण होता है। ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास और अतीत ही वह तत्त्व है जो उसे अन्य उपन्यासों से अलग करता है। इस दृष्टि से वर्तमान का हर क्षण जो अतीत बन रहा है उसे हम इतिहास कह सकते हैं और उसे उपन्यास के निर्माण का आधार मान सकते हैं, पर सद्यः व्यतीत वर्तमान का आयाम उतना विस्तृत नहीं होता जो उपन्यास के कलेवर को समेट सके। उपन्यास में स्थित 'विजन' के निर्माण के लिए लेखक को काल के वृहत्तर आयाम की आवश्यकता होती है, जो वर्तमान से बीस–पच्चीस साल पहले की घटनाओं के माध्यम से व्यक्त नहीं हो सकती। इसके लिए अतीत के आयाम में ही प्रवेश करना पड़ता है। इस सम्बन्ध में गोपाल राय का मत उल्लेखनीय है–वर्तमान का क्षण चाहे कविता और कहानी का विषय बन जाय, पर वह उपन्यास का विषय नहीं बन सकता, किसी क्षण विशेष में उपलब्ध 'विज़न' उपन्यास का विषय बन सकता है, पर उस विज़न की अभिव्यक्ति के लिए उपन्यासकार को काल के वृहत् आयाम में प्रवेश करना ही पड़ता है। यह आयाम अतीत का ही होता है।1

ऐतिहासिक उपन्यास की एक विशेषता की ओर संकेत करते हुए नरेन्द्र कोहली कहते हैं कि वैसे तो किसी भी कालखण्ड विशेष का चित्रण ऐतिहासिक उपन्यास हो सकता है किन्तु ऐतिहासिक उपन्यास होने के लिए एक अनिवार्य शर्त है–उसकी कथा का प्रख्यात होना तथा पाठकों का उससे पूर्व परिचित होना।2

ऐतिहासिक उपन्यास में इसी इतिहास को आधार बनाकर लेखक रचना को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि इतिहास की घटनाओं से ही वर्तमान जीवन के प्रश्न और मानव मूल्य मुखर हो जाते हैं। वस्तुतः ऐतिहासिक उपन्यासों का महत्त्व इसी बात में है कि वे इतिहास की घटनाओं से ऐसे ज्वलन्त प्रश्नों और समस्याओं की उद्भावना करते हैं जो वर्तमान जीवन के लिए प्रेरणा का काम करते हैं और पाठकों के मन में राष्ट्र चेतना की भावना जाग्रत करते हैं। उपन्यासकार शत्रुघ्न प्रसाद ऐतिहासिक उपन्यास को गतिशील मानव जीवन के यथार्थ का आलोकन–आलोचन मानते हैं जिसमें खण्डहर में सोया अतीत वर्तमान से जुड़ जाता है और परिस्थितियों से जूझता वर्तमान बीते अतीत से कुछ समझता है और भविष्योन्मुख हो जाता है।3

उपन्यासकार यशपाल का भी मानना है कि–अपने अतीत का मनन और मन्थन हम भविष्य के संकेत पाने के प्रयोजन से करते हैं।4

ऐतिहासिक उपन्यास में अतीत के इसी रूप को स्वीकार किया जाता है। डॉ0 रामदरश मिश्र भी ऐतिहासिक उपन्यास के इस स्वरूप को ही महत्त्वपूर्ण मानते हैं ऐतिहासिक उपन्यास में लेखक ऐतिहासिक परिवेश को उसकी सच्चाई में मूर्तिमान तो करता ही है साथ ही साथ उस परिवेश के भीतर से वह ऐसे प्रश्न, ऐसे मूल्य, ऐसे सौन्दर्य उभारता है जो व्यापक, और गहन होने के नाते वर्तमान जीवन को अपनी परिधि में समेट लेते हैं।5

ऐतिहासिक उपन्यास के सम्बन्ध में एक प्रश्न यह उभरता है कि मनुष्य वर्तमान की समस्या को

सलझाने के लिए अतीत की ओर ही क्यों लौटता है? इस सम्बन्ध में निर्मल वर्मा कहते हैं—कोई भी जाति संकट की घड़ी में अपने अतीत, अपनी जड़ों को टटोलती है। संकट की घड़ी आत्ममंथन की घड़ी है और सही आत्ममंथन हमेशा अतीत में लिए गए पफैसलों के आसपास होता है।6

निर्मल वर्मा तो उस अतीत को वर्तमान ही मानते हैं जो बीतने पर भी हमारे भीतर जीवित रहता है।7

आचार्य शुक्ल का मानना है कि मनुष्य उस अल्प क्षण जिसे वर्तमान कहते हैं, में ही आत्म प्रसार को बद्ध करके संतुष्ट नहीं होता। यह अतीत के दीर्घ पटल को भेदकर अपनी अन्वीक्षण बुद्धि को ही नहीं, रागात्मिका वृत्ति को भी साथ ले जाता है। हमारे भावों के लिए भूतकाल का क्षेत्र अत्यन्त पवित्र क्षेत्र है।8

इस विषय पर और विचार करते हुए शुक्ल जी लिखते हैं—''अतीत की स्मृति में मनुष्य के लिए स्वाभाविक आकर्षण होता है। हृदय के लिए अतीत मुक्ति लोक है जहाँ वह अनेक बंधनों से छूटा रहता है और अपने विशुद्ध रूप में विचरता है। अतीत कल्पना लोक है एक प्रकार का स्वप्नलोक है, स्मृतियाँ सुखपूर्ण दिनों की भग्नावशेष नहीं हैं वे हमें लीन करती हैं हमारा मर्म स्पर्श करती हैं।9

इस विषय पर शिवप्रसाद सिंह 'कुहरे में युद्ध' की भूमिका में लिखते हैं—''अतीत की ओर लौटना अपनी पहचान को ढूँढने का वह भाव है जो अपनी जड़ों की ओर लौटने का संकल्प लेकर चला है।10

उपन्यास में इतिहास का जो रूप प्रस्तुत होता है वह इतिहास के सही प्रस्तुतीकरण और संयोजन पर निर्भर करता है। ऐतिहासिक उपन्यासों में जो तथ्य प्रस्तुत किये जाते हैं वे किसी—न—किसी रूप से इतिहास से सम्बद्ध होने चाहिए अन्यथा सत्य के अभाव में वह पाठकों के रसास्वादन में बाधा उत्पन्न करेंगे जिससे उपन्यास की लोकप्रियता कम हो जायेगी। इतिहास के कार्य—कारण परम्परा की अभिव्यक्ति ऐतिहासिक उपन्यासकार का दायित्व है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास के सही संयोजन को महत्त्वपूर्ण मानते हैं—''ऐतिहासिक लेखक का वक्तव्य इतिहास की उत्तम जानकारी तथा उस युग की प्रमाणिक पुस्तकों, मुद्राओं और लेखों के आधार पर जाँची हुई होनी चाहिए। ऐतिहासिक उपन्यास का लेखक मृत घटनाओं और अर्द्धज्ञान या नाममात्र से परिचित व्यक्तियों के कंकाल में प्राण संचार करता है।11

प्रामाणिक तथ्यों की महत्ता होते हुए भी ऐतिहासिक उपन्यासकार को कल्पना के प्रयोग की छूट भी होती है और इस कल्पना के माध्यम से लेकर ऐतिहासिक घटनाओं को जीवंतता प्रदान करते हैं। कभी—कभी उपन्यासकार कल्पना के माध्यम से इतिहास के उन सत्यों का उद्घाटन कर देते हैं जिसका अनुमान इतिहासकार भी नहीं कर पाते। उपन्यास में कल्पना के समावेश के सम्बन्ध में गोपाल राय लिखते हैं—''उपन्यासकार अपने प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित तथ्यों का विवरण ही नहीं प्रस्तुत करता, बल्कि अपनी संवेदना और कल्पना के मिश्रण से एक ऐसा संसार रचता है जो ऐतिहासिक तथ्य नहीं होता, पर जो सम्पूर्णतः यथार्थ होता है। वह प्रत्यक्ष अनुभवाधारित तथ्यों को विकृत नहीं करता, अपनी संवेदना और कल्पना से एक ऐसे संसार की रचना करता है, जो कल्पनाप्रसूत होते हुए भी सच होता है।12

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तो इस कल्पना शक्ति को इतना महत्त्वपूर्ण मानते हैं कि इसके बिना ऐतिहासिक उपन्यास लिखने की आज्ञा ही नहीं देते। लेखकों में इतिहास के विभिन्न कालों की सामाजिक स्थिति और संस्कृति का अलग—अलग विशेष अध्ययन करने और सामाजिक स्थिति के सूक्ष्म ब्योरों की ऐतिहासिक कल्पना द्वारा उद्भावना करने की शक्ति होनी चाहिए।13

डॉ. रामपियारे तिवारी औपन्यासिक कल्पना को ही मूल कसौटी मानते हैं क्योंकि उपन्यास ऐतिहासिक शोध नहीं होता जिसमें इतिहास को जैसा का तैसा दोहराया जाए। उसका कार्य तथ्य संकलन आरै विश्लेषण नहीं ह` वरन् एक रसात्मक सृजन ह। ऐतिहासिकता उसके कथ्य के विश्वास का आधार मात्र होती है। इतिहास का आधार युग धर्म और सर्वजन विदित सत्य को स्थिर रखने सहायक होता है।14

ऐतिहासिक उपन्यास के लिए कल्पना के प्रयोग की आवश्यकता को निर्मल वर्मा ने भी स्वीकार किया है। वे मानते हैं कि इतिहास तथ्यात्मक सत्य होता है, जिसे कल्पना के द्वारा ही बेहतर परिप्रेक्ष्य में ढालकर मानवीय सत्य के रूप में उपन्यासकार परिणत करता है।15

ऐतिहासिक उपन्यासकार द्वारा कल्पना से इतिहास की सत्यता को पुष्ट करने की जो पद्धति ऐतिहासिक उपन्यासों में अपनायी जाती है उसे लगभग सभी विद्वानों ने स्वीकार किया है और उसे महत्वपूर्ण भी माना है लेकिन कहीं—कहीं यह प्रश्न भी उठता है कि उपन्यासकार द्वारा जो पात्र और व्यापार सत्यमूलक अनुमान के आधार पर कल्पित किये जाते हैं क्या उन्हें स्वीकार किया जा सकता है? इस सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल स्पष्ट

करते हैं कि यदि उपन्यासकार द्वारा कल्पित किये गये पात्र और व्यापार उस समय के इतिहास की सामाजिक स्थिति, जिसका उपन्यासकार ने वर्णन किया है, के अनुकूल हो तो उस सत्यमूलक अनुमान को मानव लेने में कोई हानि नहीं है क्योंकि उसके अनुमान के साधन तो हमारे पास हैं लेकिन खण्डन का एक भी नहीं।16

ऐतिहासिक उपन्यासों में प्रयुक्त कल्पना को ऐतिहासिक कल्पना की संबा देते हुए मैनेजर पाण्डेय उसे दो रूपों में देखते हैं—एक सत्यनिष्ठ कल्पना, दूसरा लोलुप कल्पना। सत्यनिष्ठ कल्पना विवेकशील होती है, वह उपन्यास के लिए आवश्यक और अनावश्यक में अन्तर करते हुए संग्रह और त्याग का काम करती है जबकि लोलुप कल्पना में ऐसा विवेक नहीं होता है, वह सब कुछ समेटने की कोशिश करती है। सत्यनिष्ठ कल्पना ही उपन्यास के लिए आवश्यक और महत्त्वपूर्ण होती है क्योंकि उसके द्वारा उद्घाटित सत्य विश्वसनीय होता है।17

उपन्यास में कल्पना के प्रयोग की छूट और महत्ता होने पर भी उसके प्रयोग की एक सीमा है। कल्पना के प्रयोग में कभी अतिरेक नहीं होना चाहिए और न ही वह अनियन्त्रित होनी चाहिए क्योंकि ऐसा होने पर उपन्यास की ऐतिहासिकता प्रभावित हो सकती है इस सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल स्पष्ट करते हैं कि ''लेखक उन्हीं छोटी—छोटी घटनाओं को ऊपर से ला सकता है जो किसी ऐतिहासिक घटना के अन्तर्गत अनुमान की जा सके अथवा संसार की गति और समाज की तत्कालीन व्यवस्था का अंग समझी जा सके। न वह किसी घटना में उलटपफेर कर सकता है और न ऐसी बातों को ठूँस सकता है जिसका अनुमान उस समय की व्यवस्था को देखते नहीं हो सकता।18

ऐतिहासिक उपन्यासों में औचित्य का विशेष महत्त्व होता है, चाहे वह वातावरण के क्षेत्र में हो या पात्रों के या पिफर भाषा के क्षेत्र में। यह औचित्य ही है जो उपन्यासकार को अपनी सीमा में रहने के लिए बाध्य करता है अन्यथा अनौचित्य की स्थिति में उपन्यास की ऐतिहासिकता को ठेस पहुँचती है और उसका प्रभाव पाठकों पर उस रूप में नहीं पड़ पाता जैसा कि उपन्यासकार आशा करता है। किसी रचना में औचित्य का अभाव अगर सर्वत्र दिखने लगता है तो रचना ऐतिहासिकता की श्रेणी से गिर जाती है। द्विवेदीजी तो औचित्य के ऐतिहासिक उपन्यासों में विशेष महत्त्वपूर्ण मानते हैं क्योंकि ऐतिहासिक उपन्यास जिस वातावरण में बँधा होता है उससे असम्बद्ध कोई भी बात होने पर वह खटकने लगती है। देशकाल के अनुरूप वातावरण के चित्रण में औचित्य का विशेष महत्त्व होता है। इस रामपियारे तिवारी भी स्वीकार करते हैं क्योंकि जब तक उपन्यास के कथ्य की सम्बद्ध युग की स्थितियों और परिस्थितियों के अनुकूल यथार्थ रूप में अवतारणा नहीं होगी तब तक उसकी सपफलता और सार्थकता सिद्ध नहीं होगी। युगानुरूप चित्रण में इतिहास सम्मत तत्कालीन रीति—नीति, आचार—विचार, सामाजिक मनोदशा, भौगोलिक स्थिति आदि का प्राणवंत नियमन नहीं होने पर पाठकीय मनःस्थिति वर्तमान से हटकर अतीत की ओर उन्मुख नहीं होती।19

वातावरण की स्थापना को ऐतिहासिक उपन्यास की एक बड़ी शक्ति देवीशंकर अवस्थी ने भी माना है लेकिन उनका बल बाहरी के साथ आन्तरिक वातावरण की स्थापना पर भी रहा है इस सम्बन्ध में वे कहते हैं—''आन्तरिक मन्तव्यों तक पहुँचना तभी सम्भव है जब समाज की द्वंद्वात्मक गति का वैज्ञानिक ज्ञान हो और मानवीय चेतना के विविध स्तरों की आन्तरिक एकता का स्पष्ट आभास हो। युग के आन्तरिक मन्तव्य को अवस्थी जी इतना महत्त्व देते हैं कि आन्तरिक चित्रण के दौरान यदि कुछ घटनाएँ या चरित्र इतिहास के अनुवर्ती भी हो जाते हैं तो उपन्यास की सपफलता पर कोई प्रश्न नहीं उठेगा। युग के आन्तरिक मन्तव्य, आन्तरिक विरोधभासों, इतिहास की विकासमान शक्तियों और 'सोशल मोरस' ैंवबपंस डवतमे) के सम्पूर्ण चित्रण पर आधारित होने चाहिए। देशकालगत औचित्य के साथ पात्रगत औचित्य भी महत्त्वपूर्ण होता है। डॉ. गोपाल राय उपन्यास के मूल पात्र में ऐतिहासिकता के औचित्य को स्वीकार करते हैं।20

ऐतिहासिक उपन्यासों के निर्माण में भाषा—शैली की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। ऐतिहासिक उपन्यासों की भाषा में तत्कालीन समाज में प्रचलित भाषा की विशेषताओं का होना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि भाषा भी परिवेश को व्यक्त करती है। चित्रित काल के अनुरूप भाषा के न होने से रचना कभी प्रभावी नहीं बन पाती। जहाँ तक शैली का प्रश्न है, सभी प्रकार के उपन्यासों में वर्णनात्मक, विवरणात्मक, कथात्मक, भावप्रधान और अलंकारप्रधान शैली पायी जाती है। ऐतिहासिक उपन्यास भी इससे अलग नहीं है। बस इसमें प्रतीकों तथा स्मृतियों के सहारे इतिहास को इस रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है जससे वह समाज से सम्बद्ध प्रतीत हों।

ऐतिहासिक उपन्यास अपनी रचनात्मकता के आधार पर दो प्रकार के दिखायी देते हैं। एक अर्द्ध ऐतिहासिक या रोमानी जिनमें ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में कल्पित कथा कही जाती है और रोमांचकारी घटनाओं की सृष्टि करके इन्हें मनोरंजक बनाया जाता है, दूसरे वे जो विशुद्ध ऐतिहासिक होते हैं और इतिहास प्रसिद्ध घटना तथा व्यक्ति का आश्रय लेकर चलते हैं। इन दोनों के आधार पर ऐतिहासिक कथावस्तु को कुछ भागों में वर्गीकृत किया जाता है–

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में प्रेमकथा प्रस्तुत करने वाले
2. ऐतिहासिक कथा के समानान्तर व्यक्तिगत कथा लेकर चलने वाले
3. प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना पर आधारित
4. मुख्य ऐतिहासिक व्यक्ति को लेकर लिखित
5. गौण ऐतिहासिक व्यक्ति को लेकर लिखित

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में प्रेमकथा प्रस्तुत करने वाले उपन्यास में कथा और इतिहास में स्पष्ट भेद नहीं होता। ये कथाएँ दंत कथाओं के निकट होती हैं तथा किसी कल्पित या अर्द्ध कल्पित व्यक्ति को नायक–नायिका बनाकर इतिहास में वर्णित होकर प्रस्तुत होती हैं।

जिन उपन्यासों की कथावस्तु में ऐतिहासिक कथा के साथ व्यक्तिगत कथा होती है उनमें ऐतिहासिक–कथा किसी ऐतिहासिक घटना और व्यक्तिगत कथा प्रेम–प्रसंग पर आधारित होती है। इनमें ऐतिहासिक तथ्यों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर उन्हें कल्पित अंश में मिला दिया जाता है। ऐतिहासिक और कल्पित पात्र एकत्र होकर अतीत को यथार्थ और जीवंत बना देते हैं।

कुछ उपन्यास ऐतिहासिक युद्धों, विजयों और पराभवों से सम्बन्धित होते हैं। ऐसी घटनाएँ विशेषतया भारतीय हृदय को सहज स्पर्श करती हैं। अतः उपन्यास अन्य विशेषताओं के अभाव में केवल कहानी से पाठकों को प्रभावित कर लेते हैं।

ऐतिहासिक व्यक्ति को लेकर लिखित उपन्यास में राजा–रानी से लेकर दास–दासी तक के स्वाभाविक वेशभूषा में उपयुक्त बाते करते दिखायी देते हैं। वे ऐतिहासिक कथा के माध्यम से मानव स्वाभाव का अध्ययन प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास में व्यक्ति को प्रधानता दी जाती है उसके व्यक्तित्व का विश्लेषण किया जाता है। कभी–कभी ऐसे व्यक्तियों को लेकर भी उपन्यास की रचना कर दी जाती है जो इतिहास में बहुत विख्यात नहीं होते हैं।

ऐतिहासिक उपन्यास के स्वरूप पर विचार करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इसमें इतिहास, कल्पना और युगानुरूप परिवेश का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सपफल ऐतिहासिक उपन्यास वे ही माने जाते हैं जो अतीत की उपलब्धियों, वर्तमान के सत्य और भविष्य की प्रेरणा के आधार पर रचित होते हैं। डॉ. बदरीदास के शब्दों में कहें तो सपफल ऐतिहासिक उपन्यास में इतिहास का ज्ञान रचनात्मक कल्पना और मानव–स्वभाव की परख होनी चाहिए।21

डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद का मानना है कि हिन्दी का ऐतिहासिक उपन्यास अपनी नवजाग्रत ऐतिहासिक खोज और प्रगतिशील राष्ट्रीय दृष्टि के साथ नयी दिशा पाने और नव–निर्माण की ओर बढ़ रहा है।22

संदर्भः–

1. गोपाल राय, अतीत, इतिहास और ऐतिहासिक उपन्यास, 'समकालीन भारतीय साहित्य जनवरी–पफरवरी 2006, पृ. 75
2. नरेन्द्र कोहली, हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों की उपलब्धियाँ, 'चिन्तन सृजन', जनवरी–मार्च, 2006, पृ. 39
3. डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद, 'शिप्रा साक्षी हैं' उपन्यास, अपनी बात
4. यशपाल, प्राक्कथन, दिव्या, उद्धृत
5. डॉ. रामदरश मिश्र, हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्र, पुर्नमुद्रित, सं. 1995, राजकमल प्रकाशन, पृ. 229
6. निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति, पृ. 62
7. सं. गगन गिल, संसार में निर्मल वर्मा, संस्करण, 1976, पृ. 107
8. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि भाग–2, पृ. 31
9. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि भाग–3, पृ. 250

10. शिवप्रसाद सिंह, 'कुहरे का युद्ध', भूमिका गपप
11. हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली–7, 'उपन्यास और कहानी', प्रथम सं. 1981, राजकमल प्रकाशन, पृ. 229
12. गोपाल राय, अतीत, इतिहास और ऐतिहासिक उपन्यास, 'समकालीन भारतीय साहित्य, जनवरी–पफरवरी 2006, पृ. 75
13. आ. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, सोलहवाँ पुनर्मुद्रण संवत् 2025, पृ. 514
14. हिन्दी अनुशीलन, 'ऐतिहासिक उपन्यासों का रचनातंत्र, (डॉ. रामपियारे तिवारी), मार्च 1998, अंक–1, पृ0 28
15. गगन गिल, संसार में निर्मलवर्मा, 'लिखना बहुत अकेलेपन का काम है', यतीन्द्र मिश्र की वार्ता, प्र.सं. 2006 रेमाधाव पब्लिकेशन प्रा.लि., पृ. 112
16. आ रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि भाग–3, (उपन्यास), द्वितीय सं. 1985, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नयी दिल्ली, पृ. 103
17. मैनेजर पाण्डेय, इतिहास और ऐतिहासिक उपन्यास, 'समकालीन भारतीय साहित्य, जनवरी–पफरवरी 2006, पृ0 63
18. आ. रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि भाग–3, 'उपन्यास', द्वितीय सं. 1985, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नयी दिल्ली, पृ. 104
19. हिन्दी अनुशीलन, 'ऐतिहासिक उपन्यासों का रचना–तंत्र, डॉ. रामपियारे तिवारी, मार्च 1998, अंक–1, पृ. 29
20. गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, पृ. 90
21. डॉ. बदरीदास, हिन्दी उपन्यास पृष्ठभूमि और परम्परा, प्र.सं. 1966, पृ. 377
22. हिन्दी अनुशीलन, (सं. डॉ. लक्ष्मीनारायण भारद्वाज) 'ऐतिहासिक उपन्यास की दिशा दृष्टि', डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद, अप्रैल 1996, अंक–2, पृ. 118

डॉ. गोविन्द के. नंदाणिया
श्री एस. आर. भाभोर आट्‌र्स कॉलेज सींगवड.